Sri Guru Nanak Dev Khalsa College
Dev Nagar-110005

Post-Event Report

Event	संवाद
Topic	शख़्सियत से मुलाक़ात
Organizer	हिंदी साहित्य सभा 'मंथन'
Date	**10** अप्रैल, **2022**
Time	**11:30** बजे
Duration	**2** घंटे
Place/Platform	ज़ूम
Number of Participants	**40**
Guest Speaker/Trainer	सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
Welcome Speech	महेंद्र प्रताप सिंह
Introduction to the Speaker	महेंद्र प्रताप सिंह

Activities

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में 'शख़्सियत से मुलाक़ात' नामक शृंखला कार्यक्रम के अंतर्गत एक मासिक व्याख्यान आयोजित करवाती आ रही है। इसी शृंखला का भाग-**6 10** अप्रैल, **2022** को आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' **(**नार्वे**) (**कवि, नाटककार एवं मीडिया विशेषज्ञ**)** थे। कार्यक्रम का शुभारंभ हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार द्वितीय वर्ष की छात्रा भावना अवस्थी ने किया। तत्पश्चात् हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' के संयोजक महेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथि वक्ता का स्वागत करते हुए मंथन का परिचय दिया।

मंच संचालिका भावना अवस्थी ने अतिथि वक्ता सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' से वार्तालाप आरंभ किया। बाद में कार्यक्रम में जुड़े श्रोताओं ने भी चैट बॉक्स में टाइप या हैंड रेस के माध्यम से अपने प्रश्न पूछे। वक्ता ने बड़ी सहजता एवं सरलता से सभी की जिज्ञासाओं को शांत किया। अंत में विभागाध्यक्ष डॉ. अंजु ने अतिथि वक्ता एवं कार्यक्रम में जुड़े सभी श्रोताओं को कार्यक्रम में जुड़ कर सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। सभी के स्क्रीनशॉट लेने और फीडबैक फ़ॉर्म भरते ही कार्यक्रम औपचारिक रूप से समाप्त हुआ।

Main Ideas

गत इक्कीस वर्षों से नार्वे में हिंदी की पत्रिकाओं 'परिचय' और 'स्पाइल' (दर्पण) का संपादन कर रहे शरद आलोक का वास्तविक नाम सुरेशचंद्र शुक्ल है। वे नॉर्वे के बारे में बताते हुए कहते हैं कि नॉर्वे की संस्कृति भारतीय संस्कृति से प्रभावित है। वह 'परिचय' नामक पत्रिका के संपादक रहे हैं। जिसका हिंदी एवं पंजाबी में संपादन किया जाता था। उनका मानना है कि भारत में साहित्य के मामले में हर कोई आलोचक बन जाता है जिसे आलोचना नहीं भी आती वह भी आलोचक बन जाता है। वह शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से नार्वे गए थे। नार्वे में पंजाबी, तमिल, उर्दू , हिंदी बोली जाती है। वहां के निवासी पंजाबी और हिंदी पढ़ना चाहते हैं। वह लखनऊ में जब नौवीं कक्षा में पढ़ते थे तभी से उन्होंने लिखना शुरू किया था। यह उनका पहला पड़ाव था। उनकी माँ तुलसीदास कृत रामचरितमानस पढ़ा करती थी। शायद यही वह कारण है जहां से उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली।

एक लेखक होने के नाते उनके आसपास घटी घटनाओं, सामाजिक तरीके से जो प्रथाएं चल रही हैं उन्हीं से प्रभावित होकर अपने शब्दों में उन घटनाओं को उचित स्थान दे कर अपने शब्दों में ढ़ाल लेते हैं। उन्होंने अपनी मन मंदिर में नये देवता का कुछ अंश भी सुनाया। उन्होंने अपनी आने वाली कहानी जिसका नाम मिट्टी के देवता जो कि किसान आंदोलन पर आधारित है उस पर भी चर्चा की। उनके मुताबिक लेखक को लिखने में रुचि का होना बहुत ज़रूरी है।उन्होंने अपनी फिल्मों के बारे में बताते हुए कहा कि 1969 से 1972 तक लगभग सभी फिल्में देखी है जो कि राजेश खन्ना का समय भी कहा जा सकता हैं। उन्हें शक्ति कपूर, आशा भोसले और अमिताभ बच्चन जैसे उच्चतम वरिष्ठ लोगों से मिलने का अवसर भी मिला। वह महात्मा गांधी से अत्यंत प्रभावित थे।	
Vote of thanks	डॉ. अंजु
Feedback https://forms.gle/xPkjnWdXQFYJt2RW7	

Poster (Attach below)

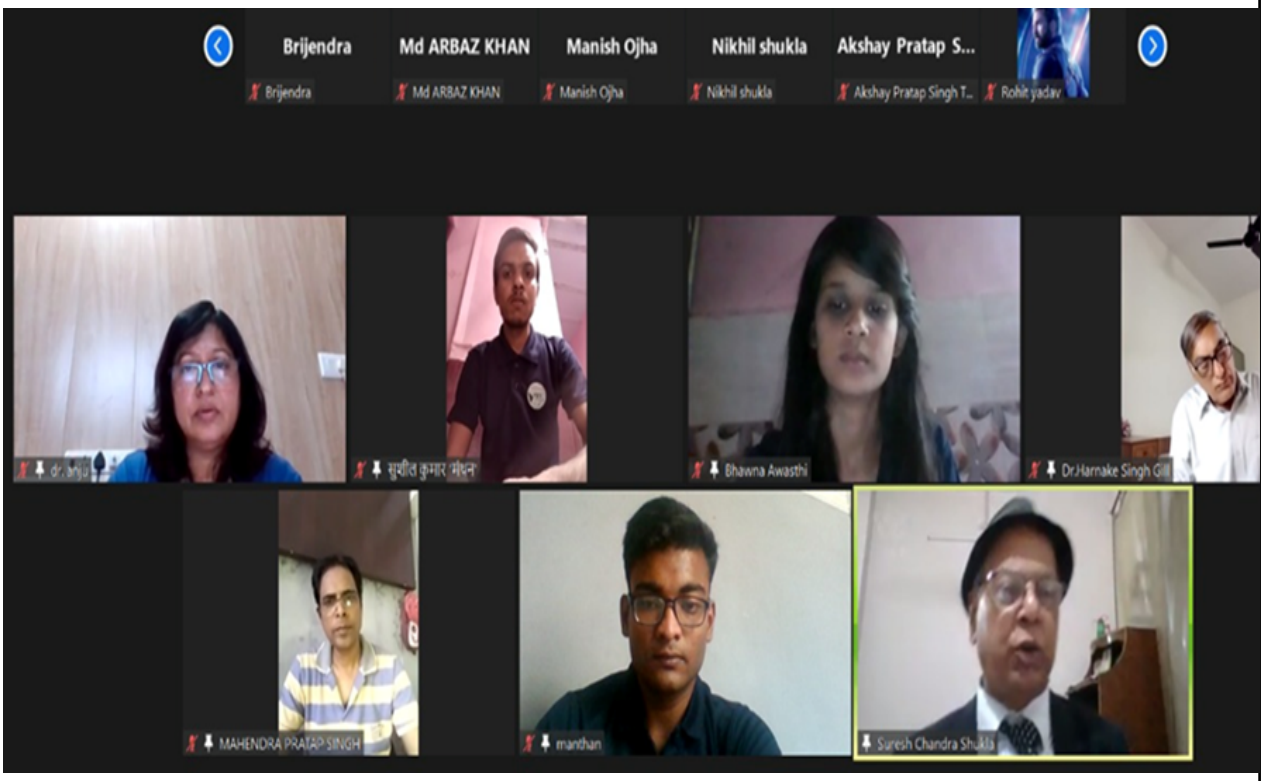

Pictures (Attach Five Photos)

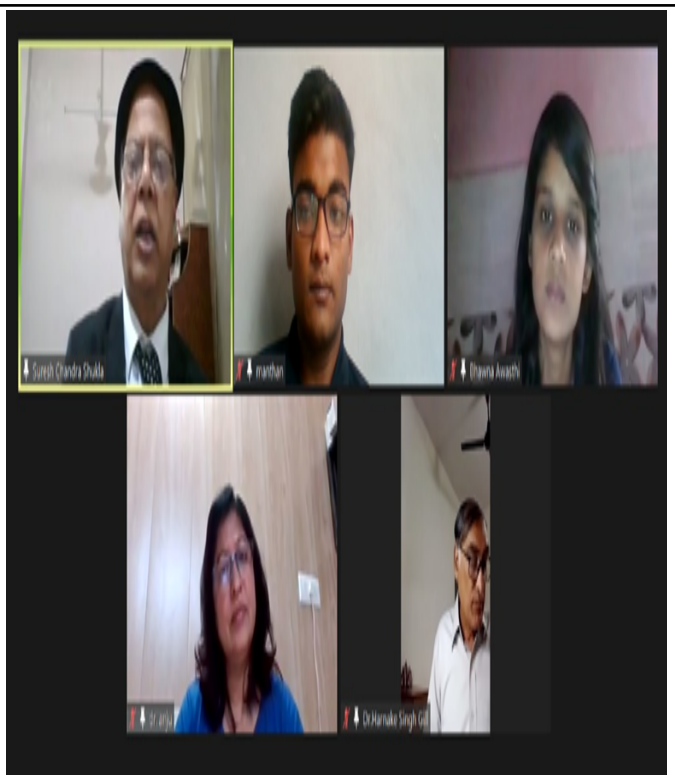

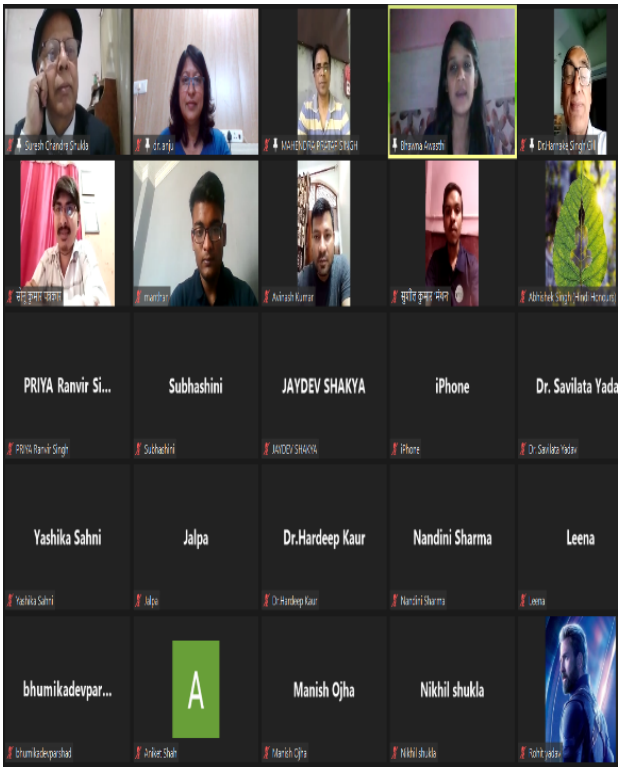

PRIYA Ranvir Si...
Subhashini
JAYDEV SHAKYA
iPhone
Dr. Savilata Yada
Yashika Sahni
Jalpa
Dr.Hardeep Kaur
Nandini Sharma
Leena
bhumikadevpar...
A
Manish Ojha
Nikhil shukla

Attach Photocopy of two Certificates

Signature: _ _____

Name: _डॉ. अंजु

(प्रभारी)

(हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)